श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया।
यः साक्षात्कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ १॥
बीजस्यान्तरिवाङ्कुरो जगदिदं प्राङ्निर्विकल्पं शनै-
र्मायाकल्पितदेशकालकलनावैचित्र्यचित्रीकृतम्।
मायावीव विजृम्भयत्यपि महायोगीव यः स्वेच्छया
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ २॥
यस्यैव स्फुरणं सदात्मकमसत्कल्पार्थकं भासते
साक्षात् तत्त्वमसीति वेदवचसा यो बोधयत्याश्रितान्।

जो अपने हृदयस्थित दर्पणमें दृश्यमान नगरी-सदृश विश्वको निद्राद्वारा स्वप्नकी भाँति मायाद्वारा बाहर प्रकट हुएकी तरह आत्मामें देखते हुए ज्ञान होनेपर अथवा निद्रा भंग होनेपर अपने अद्वितीय आत्माका साक्षात्कार करते हैं, उन श्रीगुरुस्वरूप श्रीदक्षिणामूर्तिको यह मेरा नमस्कार है॥ १॥

जिन्होंने महायोगीकी तरह अपनी इच्छासे सृष्टिके पूर्व निर्विकल्परूपसे स्थित इस जगत्को बीजके भीतर स्थित अंकुरकी भाँति मायाद्वारा कल्पित देश, काल और धारणाकी विचित्रतासे चित्रित किया है तथा मायावी-सदृश जँभाई लेते हुए-से दीखते हैं, उन श्रीगुरुस्वरूप श्रीदक्षिणामूर्तिको यह मेरा नमस्कार है॥ २॥

जिसका सदात्मक स्फुरण ही असत्-तुल्य भासित होता है, जो

यत्साक्षात्करणाद्भवेन्न पुनरावृत्तिर्भवाम्भोनिधौ
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ ३॥
नानाछिद्रघटोदरस्थितमहादीपप्रभाभास्वरं
ज्ञानं यस्य तु चक्षुरादिकरणद्वारा बहिः स्पन्दते।
जानामीति तमेव भान्तमनुभात्येतत् समस्तं जगत्
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ ४॥
देहं प्राणमपीन्द्रियाण्यपि चलां बुद्धिं च शून्यं विदुः
स्त्रीबालान्धजडोपमास्त्वहमिति भ्रान्ता भृशं वादिनः।
मायाशक्तिविलासकल्पितमहाव्यामोहसंहारिणे
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ ५॥

अपने आश्रितोंको '**साक्षात् तत्त्वमसि**' अर्थात् 'तुम साक्षात् वही ब्रह्म हो' इस वेद-वाक्यद्वारा ज्ञान प्रदान करते हैं तथा जिनका साक्षात्कार करनेसे पुनः भवसागरमें आवागमन नहीं होता, उन श्रीगुरुस्वरूप श्रीदक्षिणामूर्तिको यह मेरा नमस्कार है॥ ३॥

अनेक छिद्रोंवाले घटके भीतर स्थित विशाल दीपककी उज्ज्वल प्रभाके समान ज्ञान जिनके नेत्र आदि इन्द्रियोंद्वारा बाहर प्रसरित होता है तथा जैसा मैं समझता हूँ कि उसीके प्रकाशित होनेपर यह सम्पूर्ण जगत् प्रकाशित होता है, उन श्रीगुरुस्वरूप श्रीदक्षिणामूर्तिको यह मेरा नमस्कार है॥ ४॥

भ्रमित हुए बहुवादी-शून्यवादी बौद्ध आदि देह, प्राण, इन्द्रियोंको तथा तीव्र बुद्धिको भी स्त्री, बालक, अंध और जडकी तरह शून्य मानते हैं तथा 'अहं' को ही प्रधानता देते हैं, ऐसे माया-शक्तिके विलाससे कल्पित महामोहका संहार करनेवाले उन श्रीगुरुस्वरूप श्रीदक्षिणामूर्तिको यह मेरा नमस्कार है॥ ५॥

राहुग्रस्तदिवाकरेन्दुसदृशो मायासमाच्छादनात्
सन्मात्रः करणोपसंहरणतो योऽभूत् सुषुप्तः पुमान्।
प्रागस्वाप्समिति प्रबोधसमये यः प्रत्यभिज्ञायते
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ ६॥
बाल्यादिष्वपि जाग्रदादिषु तथा सर्वास्ववस्थास्वपि
व्यावृत्तास्वनुवर्तमानमहमित्यन्तः स्फुरन्तं सदा।
स्वात्मानं प्रकटीकरोति भजतां यो मुद्रया भद्रया
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ ७॥
विश्वं पश्यति कार्यकारणतया स्वस्वामिसम्बन्धतः
शिष्याचार्यतया तथैव पितृपुत्राद्यात्मना भेदतः।
स्वप्ने जाग्रति वा य एष पुरुषो मायापरिभ्रामित-
स्तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ ८॥

जो पुरुष राहुद्वारा ग्रस्त सूर्य-चन्द्रके समान मायाद्वारा समाच्छादित होनेके कारण सन्मात्रका इन्द्रियोंद्वारा उपसंहार करके सो गया था, उसे निद्रामें लीन होनेपर अथवा जागनेके पश्चात् जो प्रत्यभिज्ञातुल्य भासित होता है, उन श्रीगुरुस्वरूप श्रीदक्षिणामूर्तिको यह मेरा नमस्कार है॥ ६॥

जो अपने भक्तोंके समक्ष भद्रा मुद्राद्वारा बाल, युवा, वृद्ध, जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति तथा सभी व्यावर्तित अवस्थाओंमें भी अनुवर्तमान एवं सदा 'अहं' रूपसे अन्तःकरणमें स्फुरमाण स्वात्माको प्रकट करते हैं, उन श्रीगुरुस्वरूप श्रीदक्षिणामूर्तिको यह मेरा नमस्कार है॥ ७॥

जिनकी मायाद्वारा परिभ्रामित हुआ यह पुरुष स्वप्न अथवा जाग्रत्-अवस्थामें विश्वको कार्य-कारण, स्वामी-सेवक, शिष्य-आचार्य तथा पिता-पुत्रके भेदसे देखता है, उन श्रीगुरुस्वरूप श्रीदक्षिणामूर्तिको यह मेरा नमस्कार है॥ ८॥

भूरम्भांस्यनलोऽनिलोऽम्बरमहर्नाथो हिमांशुः पुमा-
नित्याभाति चराचरात्मकमिदं यस्यैव मूर्त्यष्टकम्।
नान्यत्किञ्चन विद्यते विमृशतां यस्मात् परस्माद्विभो-
स्तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ ९ ॥
सर्वात्मत्वमिति स्फुटीकृतमिदं यस्मादमुष्मिन् स्तवे
तेनास्य श्रवणात् तदर्थमननाद्ध्यानाच्च संकीर्तनात्।
सर्वात्मत्वमहाविभूतिसहितं स्यादीश्वरत्वं स्वतः
सिध्येत् तत्पुनरष्टधा परिणतं चैश्वर्यमव्याहतम्॥ १०॥
वटविटपिसमीपे भूमिभागे निषण्णं
सकलमुनिजनानां ज्ञानदातारमारात्।

जिनकी पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, पुरुष—ये आठ मूर्तियाँ ही इस चराचर जगत्के रूपमें प्रकाशित हो रही हैं तथा विचारशीलोंके लिये जिन परात्पर विभुके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है, उन श्रीगुरुस्वरूप श्रीदक्षिणामूर्तिको यह मेरा नमस्कार है॥ ९॥

चूँकि इस स्तोत्रमें यह स्पष्ट किया गया है कि यह चराचर जगत् सर्वात्मस्वरूप है, इसलिये इसका श्रवण, इसके अर्थका मनन, ध्यान और संकीर्तन करनेसे स्वतः सर्वात्मस्वरूप महाविभूतिसहित ईश्वरत्वकी प्राप्ति होती है, पुनः आठ रूपोंमें परिणत हुआ स्वच्छन्द ऐश्वर्य भी सिद्ध हो जाता है॥ १०॥

जो वटवृक्षके समीप भूमिभागपर स्थित हैं, निकट बैठे हुए समस्त मुनिजनोंको ज्ञान प्रदान कर रहे हैं, जन्म-मरणके दुःखका

त्रिभुवनगुरुमीशं दक्षिणामूर्तिदेवं
जननमरणदुःखच्छेददक्षं नमामि॥ ११॥
चित्रं वटतरोर्मूले वृद्धाः शिष्या गुरुर्युवा।
गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्यास्तु छिन्नसंशयाः॥ १२॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❑❑

विनाश करनेमें प्रवीण हैं, त्रिभुवनके गुरु और ईश हैं, उन भगवान् दक्षिणामूर्तिको मैं नमस्कार करता हूँ॥ ११॥

आश्चर्य तो यह है कि उस वटवृक्षके नीचे सभी शिष्य वृद्ध हैं और गुरु युवा हैं। साथ ही गुरुका व्याख्यान भी मौन भाषामें है, किंतु उसीसे शिष्योंके संशय नष्ट हो गये हैं॥ १२॥

॥ इस प्रकार श्रीमच्छंकराचार्यविरचित श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्र सम्पूर्ण हुआ॥

❑❑

देत संपदासमेत श्रीनिकेत जाचकनि,
भवन बिभूति-भाँग, बृषभ बहनु है।
नाम बामदेव दाहिनो सदा असंग रंग
अर्द्ध अंग अंगना, अनंगको महनु है॥
तुलसी महेसको प्रभाव भावहीं सुगम
निगम-अगमहूको जानिबो गहनु है।
भेष तौ भिखारिको भयंकररूप संकर
दयाल दीनबंधु दानि दारिददहनु है॥

(कवितावली १६०)

❑❑